

तीखी धूप का फायदा, बुंदेलखंड में सौर ऊर्जा उत्पादन 20% ज्यादा

जल्द सूर्योदय और देर से सूर्यास्त का मिल रहा है फायदा...दोपहर में तापमान बहुत बढ़ने पर घटता है उत्पादन

चंद्रभानु यादव

लखनऊ। बुंदेलखंड इन दिनों भीषण गर्मी की मार झेल रहा है। कुछ दिनों से यहां पारा लगातार 46 डिग्री के पार बना हुआ है। लोगों के लिए चिलचिलाती धूप और गर्म हवाएं मुसीबत बनी हुई हैं। लेकिन, इसका दूसरा और सुखद पहलू भी है।

अलसुबह से ही तीखी धूप का सीधा फायदा बुंदेलखंड में सौर ऊर्जा उत्पादन को मिल रहा है। अकेले मई में यहां सौर ऊर्जा उत्पादन करीब 20 फीसदी बढ़ गया है। इतना ही नहीं यहां 70 मेगावाट का नया प्लांट भी शुरू कर दिया गया है। अगले माह तक कई नए प्लांट शुरू होंगे। कभी जल संकट और पलायन के लिए



लंबे समय तक धूप मिलने से फायदा : यूपीनेडा के वरिष्ठ परियोजना अधिकारी नरेंद्र कुमार बताते हैं कि करीब 20 फीसदी वृद्धि की वजह सुबह छह बजे से पहले सूर्योदय और

शाम छह बजे के बाद सूर्यास्त होना है। गर्मी के मौसम में लंबे समय तक सूर्य की किरणें मिलने से भरपूर उत्पादन हो रहा है। हालांकि, दोपहर के वक़्त तापमान 40 डिग्री से अधिक हो जाता है तो उत्पादन प्रभावित होता है। यदि तापमान 40 डिग्री से कम या उसके आसपास बना रहे तो सौर ऊर्जा उत्पादन में वृद्धि का आंकड़ा 30 फीसदी तक जा सकता है।

पारा अचानक न बढ़े तो फायदा ज्यादा : जालौन में निजी कंपनी के सौर ऊर्जा प्लांट के इंजीनियर सोरभ सिंह के मुताबिक सर्दी में सात बजे के बाद उत्पादन शुरू होता है। अगर कोहरा हो तो ज्यादा असर पड़ता है। गर्मी में साढ़े

पांच बजे से धूप हो जाती है तो उत्पादन जल्दी शुरू होता है और देर शाम तक होता है। अगर दोपहर में पारा 40 डिग्री से नीचे रहे तो ज्यादा फायदा मिलेगा।

पहचाना जाने वाला बुंदेलखंड आज सौर ऊर्जा उत्पादन की वदोलात पूरे प्रदेश में चमक रहा है। बुंदेलखंड में करीब 25 हजार एकड़ जमीन पर सौर ऊर्जा प्लांट स्थापित कर दिए गए हैं। इसमें ज्यादातर जमीन बंजर है। यहां अभी तक 885

मेगावाट यूटिलिटी स्केल सौर पावर परियोजना में उत्पादन हो रहा है। मई 2026 में इसमें करीब 17 मेगावाट की वदोतरी हुई है। इसी तरह 336 मेगावाट की ओपन एक्सेस सौर परियोजनाओं में भी करीब छह मेगावाट की वृद्धि हुई है।



सरखारी, डकोर, बांगरा, बमौर, बिरगा, जैतपुर, हमीरपुर, बांदा और मंडावा उपकेंद्र जल्द हो जाएंगे। ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर-2 परियोजना के तहत पहली बार सौर प्लांट से हरित ऊर्जा की सफल निकासी शुरू होने प्रदेश की विद्युत व्यवस्था के लिए उपलब्ध है। -मयूर महेश्वरी, प्रबंध निदेशक, यूपी पीपीटीसीएल

कबरई से 70 मेगावाट का उत्पादन शुरू

ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर-2 परियोजना के तहत कबरई का 220 केबी उपकेंद्र शुरू हो गया है। यहां से मंगलवार को निजी कंपनी के सौर प्लांट से पहली बार 70 मेगावाट सौर ऊर्जा की आपूर्ति की गई। उत्तर प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थापित हो रहे 4000 मेगावाट क्षमता के सौर प्लांटों से ऊर्जा निकासी के लिए 5400 करोड़ की लागत से कुल 21 विद्युत केंद्र बन रहे हैं। इनमें 10 विद्युत उपकेंद्र चालू किए जा चुके हैं।

ज्यादा तापमान में कम उत्पादन की वजह

- यूपीनेडा के विशेषज्ञ बताते हैं कि सोलर पैनल सिलिकॉन जैसे सेमीकंडक्टर (अर्धचालक) पदार्थों से बनते हैं। जब तापमान बहुत ज्यादा बढ़ जाता है तो इनकी कार्यक्षमता कम होने लगती है।
- सोलर सेल्स में इलेक्ट्रॉन्स उत्तेजित हो जाते हैं जिससे बिजली का प्रवाह ठीक से नहीं हो पाता है। अगर तापमान 25 से 35 डिग्री के बीच रहता है तो फायदा सर्वाधिक मिलता है। सुबह और शाम को इसी मानक के आसपास तापमान मिल रहा है। ऐसे में उत्पादन भरपूर हो रहा है।